MAY - JUNE 2020

OUR PUBLICATIONS

Globus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 3 मई-जून 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

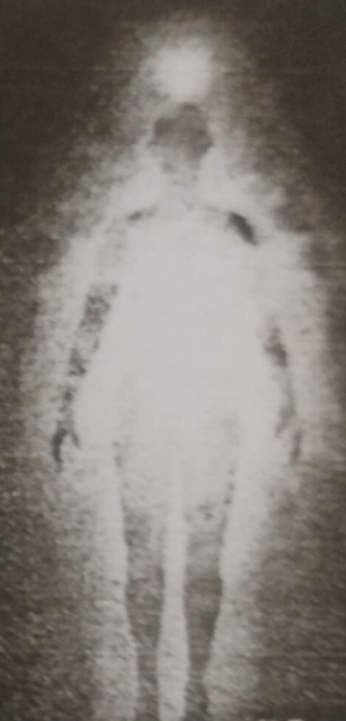

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली तथा अध्ययन आदत में सम्बन्ध का अध्ययन

स्वराज गौतम

शोध छात्र (शिक्षक-शिक्षा विभाग), राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज सिंगरामऊ, जौनपुर, उ0प्र0
सम्बद्ध- वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ0प्र0

डॉ0 अंजनी कुमार मिश्र

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षक-शिक्षा विभाग), राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज सिंगरामऊ, जौनपुर, उ0प्र0
सम्बद्ध- वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ0प्र0

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने जनपद जौनपुर में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों से प्रो0 लक्ष्मी लाल, के0 ओड़ और डॉ0 करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित संज्ञानात्मक प्रक्रिया परीक्षण प्रश्नावली तथा डॉ0 एस0 मुखोपाध्याय एवं डी0एन0 संसनवाल द्वारा निर्मित अध्ययन आदत परीक्षण प्रश्नावली के माध्यम से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित किये गये तथा प्राप्त आँकड़ों का उपयुक्त सांख्यकीय की सहायता से विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली व अध्ययन आदत धनात्मक रूप से सम्बन्धित है।

मुख्य शब्द- संज्ञानात्मक शैली, अध्ययन आदत।

प्रस्तावना:

1. संज्ञानात्मक शैली
2. अध्ययन आदत

1. संज्ञानात्मक शैली- संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी अलग-अलग परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न व्यवहार करते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने यह प्रश्न उठाया कि क्या भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी बाह्य वातावरण का प्रत्यक्षीकरण भी अलग-अलग प्रकार से करते हैं? मनोविज्ञानियों द्वारा बहुत से ऐसे कार्य किये गये जिनमें व्यक्तित्व में पायी जाने वाली वैयक्तिक भिन्नताओं को प्रत्यक्षीकरण में होने वाले व्यक्तिगत विभिन्नताओं से जोड़ने का प्रतिपादन किया गया। संज्ञानात्मक शैली से लोग सूचनाओं को संसाधित एवं संगठित करते हैं।

यहाँ इस बात पर बल देना आवश्यक है कि संज्ञानात्मक शैली संज्ञान या कौशल के स्तर पर बल नहीं डालती बल्कि यह उन मनोवृत्तियों, प्रसंगों या भिन्न-भिन्न प्रकार के ढपायों की ओर संकेत करती है जिसे विद्यार्थी अपने चिन्तन में प्रयोग करता है। वास्तव में संज्ञानात्मक शैली यह बताती है कि विद्यार्थी किस तरीकों से अपने पर्यावरण तथा अपने आप को पहचानता है और यह अपने पर्यावरण का किस प्रकार से प्रत्यक्षण करता है, सीखता है, सोचता है, मूल्यांकन करता है, निर्णय लेता है एवं समस्याओं का निराकरण करता है।'' इसके अतिरिक्त कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार संज्ञानात्मक शैली एक परिकल्पित रचना है जो उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच से सम्बन्ध को एक के बाद परिवर्तित रूप से प्रतिनिधित्व करता है।

कुछ मनोविज्ञान जैसे काप और सेगल मध्यस्था प्रक्रिया के स्थान पर संज्ञानात्मक शैली को कार्य करने ढ़ग के रूप में मूल्यांकन करते हैं वे संज्ञानात्मक शैली पद का प्रयोग विभिन्न व्यवहारगत परिस्थितियों में विद्यार्थी के कार्य के ढ़ग में एक सा विचार व्यवहार रखने के रूप में परिभाषित करते हैं। संज्ञानात्मक शैली की यह धारणा कार्य करने की रीति व आत्म-प्रत्यक्षीकरण के रूप से उसके बौद्धिक कार्य में प्रकट होती है।

2. अध्ययन आदत- अध्ययन की आदत से हमारा अभिप्राय अध्ययन के निरंतर अभ्यास से है, अध्ययन का आदत से बहुत गहन सम्बन्ध है। आदत किसी को बहुत कमजोर तथा किसी को बहुत सबल बना सकती है। प्राय: हम देखते हैं कि दो छात्र जो समान योग्यता रखते हैं, किन्तु परीक्षा के परिणाम भिन्न-भिन्न देते हैं, यह अंतर उनकी अध्ययन की आदत में भिन्नता का परिणाम है।

के0के0 जमूर के शब्दों में, ''अध्ययन की आदत एक अतिरिक्त तत्त्व है, शोध विषयक उपलब्धि में भी अध्ययन आदत एक अतिरिक्त तत्त्व के रूप में कार्य करता है।''

अनुसंधान भिन्न-भिन्न तरह के अध्ययन आदतों को प्रोत्साहित करता है, अध्ययन की आदतों की यह भिन्नता एक विशेष प्रकार के प्रशिक्षण के लिए मार्गदर्शन करती है।

शोध का औचित्य-

उपरोक्त चरों की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा में विकास के लिए उपयुक्त शिक्षण, उचित वातावरण के साथ-साथ शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों की विशेषताओं का भी अहम योगदान है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो शिक्षा के क्षेत्र में नयी-नयी शिक्षण विधियों जैसे कि प्रोजेक्ट विधि, संरचना विधि, मिश्रित शिक्षण विधियों, पल्टावी विधि इत्यादि के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता स्तर की सामग्री प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें हर प्रकार से सहयोग देने का प्रयास कर रहे हैं परन्तु इसके पश्चात भी सम्पूर्ण देश में शिक्षा के परिणाम एक जैसे नहीं आ पा रहे हैं जिसके प्रमुख कारणों पर शोध करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

संज्ञानात्मक शैली किसी भी विद्यार्थी को प्रदान की जा रही शिक्षा तथा अन्य सूचनाओं को संज्ञान में लेने की कला है। जिसके माध्यम से वह सम्पूर्ण ज्ञान का अर्थावन करने में समर्थ हो पाता है। अध्ययन आदत एक ऐसी विशेषता है जो उपरोक्त दोनों चरों (शैक्षिक चिन्तन तथा संज्ञानात्मक शैली) में निरन्तरता बनाये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। विद्यार्थी के जीवन में इन चरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका देखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन करने का निश्चय किया।

समस्या कथन:

प्रस्तुत अध्ययन के क्रियान्वयन में निम्न कथन को समस्या कथन के रूप में लिया गया है। ''जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली तथा अध्ययन आदत में सम्बन्ध का अध्ययन''।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या:

1. **संज्ञानात्मक शैली**- प्रस्तुत अध्ययन में संज्ञानात्मक शैली से आशय उन सभी क्रियाओं से है जिसमें विद्यार्थी सूचना प्रत्यक्षीकरण, संग्रहण सीमांकिकरण तथा वातावरण से जानकारी का दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाता है। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत संज्ञानात्मक शैली को स्वतंत्र व परतंत्र रूप में प्रयोग किया जायेगा जिसमें स्वतंत्र संज्ञानात्मक शैली वाले विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली सूचनाओं पर चिन्तन व मनन के लिए दूसरों पर निर्भर रहते थे।

2. **अध्ययन आदत-** प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन आदत से अभिप्राय विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी आदतों से है। जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से प्रभावी नियोजनों, एकाग्रता, सकारात्मक दृष्टिकोण, सक्रिय अध्ययन तथा आन्तरिक प्रेरणा प्रमुख रूप से सम्मिलित है।

3. **उच्च स्तर-** प्रस्तुत अध्ययन में उच्च स्तर से अभिप्राय स्नातक स्तर से है।

शोध का उद्देश्य:

1. जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन करना।
2. जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं के अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली व अध्ययन आदत में सम्बन्ध का अध्ययन।

शोध परिकल्पना:

1. जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक चिन्तन व अध्ययन आदत में कोई सार्थक सम्बनध नहीं।
2. जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली व अध्ययन आदत में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं।

शोध परिसीमन:

1. प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत जनपद जौनपुर में अवस्थित समस्त उच्च शिक्षण संस्थाओं को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध अभिकल्प:

प्रस्तुत अध्ययन में शोध अभिकल्प के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं का वर्णन किया जाता है-

1. शोध विधि
2. समष्टि
3. प्रतिदर्श
4. शोध उपकरण-निर्माण प्रक्रिया तथा अंकन
5. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

1. शोध विधि- अनुसंधान की प्रक्रिया को क्रियान्वित करने के ढंग को शोध विधि कहा जाता है। किसी अनुसंधान की शोध विधि का निर्धारण उसकी समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक अध्ययन विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया है।

बेस्ट के अनुसार, ''वर्णनात्मक अनुसंधान वर्तमान स्थिति की व्याख्या तथा विवेचना प्रस्तुत करता है। इसका सम्बन्ध उन स्थितियों तथा सम्बन्धों से है जिनका अस्तित्व वर्तमान में है अथवा उन व्यवहारों से है जो कि प्रचलित है, व उन दृष्टिकोणों अथवा अभिवृत्तियों से है, जिनका प्रचलन है, व ऐसे प्रक्रमों से है, जो कि सक्रिय है तथा उन प्रभावों से है जिन्हें अनुभव किया जा रहा है अथवा उन उपनतियों से है, जो कि विकासशील है।''

2 समष्टि- समष्टि से अभिप्राय किसी शोध कार्य के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में आने वाली सभी शोध इकाईयों के योग से होता है। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद जौनपुर में अवस्थित सभी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के रूप में समष्टि को परिभाषित किया जा सकता है।

3. प्रतिदर्श- प्रतिदर्श से अभिप्राय समष्टि के भाग से होता है जिसमें समष्टि की लगभग सभी विशेषताएँ सम्मिलित होती है तथा यह सम्पूर्ण समष्टि का प्रतिनिधित्व करती है।

1. सम्भाव्य प्रतिदर्शन
2. गैर सम्भाव्य प्रतिदर्शन

सरलता एवं वस्तुनिष्ठा की विशेषताओं के कारण शोधकर्ता द्वारा द्वि-स्तरीय प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत जौनपुर जनपद के 10 ग्रामीण व 10 शहरी महाविद्यालयों का चयन प्रथम स्तर पर किया गया है तथा द्वितीय स्तर पर इन्हीं महाविद्यालयों में से 420 विद्यार्थियों (210 छात्र व 210 छात्राओं) का चयन करके आँकड़े एकत्रित किये गये। जिसमें से 380 विद्यार्थियों (196 छात्र व 184 छात्राओं) के प्रपत्रों को शोध के लिए उपयुक्त पाया गया। प्रतिदर्श के चयनित महाविद्यालयों तथा विद्यार्थियों की सारणी निम्नलिखित है-

क्र. सं.	महाविद्यालय का नाम	शहरी/ ग्रामीण	छात्र	छात्राएँ
1.	तिलकधारी पी0जी0 कालेज, जौनपुर	शहरी	10	12
2.	मो0 हसन पी0जी0 कालेज, जौनपुर	शहरी	8	8
3.	राजा कृष्ण दत्त पी0जी0 कालेज, जौनपुर	शहरी	12	10
4.	डॉ0 ए0एच0 रिजवी सिया डिग्री कालेज, जौनपुर	शहरी	14	10
5.	तिलकधारी महिला महाविद्यालय, जौनपुर	शहरी	8	14
6.	मुस्लिम गर्ल्स डिग्री कालेज, जौनुपर	शहरी	6	8
7.	मुक्तेश्वरी प्रसाद महाविद्यालय, जौनपुर	शहरी	10	4
8.	गुलाबी देवी महाविद्यालय सिद्दीकपुर, जौनपुर	शहरी	10	6
9.	शिवानी गौरव मेमोरियल लॉ कालेज, जौनपुर	शहरी	8	10
10.	उमानाथ सिंह विधि महाविद्यालय फरीदपुर, जौनपुर	शहरी	6	12
11.	एस0जी0 डिग्री कालेज, समोधापुर	ग्रामीण	10	14
12.	राजा हरपाल सिंह डिग्री कालेज, सिंगरामऊ	ग्रामीण	8	6
13.	सल्तनत बहादुर महाविद्यालय, बदलापुर, जौनपुर	ग्रामीण	4	4
14.	राज गौरव महाविद्यालय खुटहन, जौनपुर	ग्रामीण	6	8
15.	श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोभी, जौनपुर	ग्रामीण	12	10
16.	सहकारी पी0जी0 कालेज मिहरांवा, जौनपुर	ग्रामीण	14	12
17.	राम अवध गन्ना कृषक महाविद्यालय ताखा, शाहगंज	ग्रामीण	12	14
18.	राज बहादुर महाविद्यालय गुलालपुर, जौनपुर	ग्रामीण	14	10
19.	श्री राजा राम महाविद्यालय तरियारी केराकत, जौनपुर	ग्रामीण	12	8
20.	श्री बजरंग महाविद्यालय, घनश्यामपुर, जौनपुर	ग्रामीण	12	4

शोध उपकरण-

1. अध्ययन आदत परीक्षण (डॉ0एस0 मुखोपाध्याय तथा डी0एन0 संसनवाल द्वारा निर्मित)
2. संज्ञानात्मक प्रक्रिया परीक्षण (प्रो0 लक्ष्मी लाल के0 ओड़ और डॉ0 करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित संज्ञानात्मक प्रक्रिया परीक्षण प्रश्नावली)

सांख्यिकीय तकनीक- प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण हेतु केन्द्रीय प्रवृत्तियों के मापों में से सामान्तर माध्य, परिवर्तनशीलता के मापों में से प्रमाप विचलन तथा प्रचालिक परीक्षणों में से t- परीक्षण तथा ANOVA का प्रयोग किया गया है जो कि अगले अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी-4.1 : उ0शि0सं0 में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के संज्ञानात्मक शैली का तुलनात्मक अध्ययन

विवरण	संख्या N	माध्य X	प्रमाप विचलन δ	मानक त्रुटि (SE)	सार्थकता स्तर	t मान सारणी	t मान परिकलित	परिणाम
उ0शि0सं0 में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली	196	168 85	12 44	3 46	$\alpha = 0.05$	$t = 1.96$	2 86	शून्य (H_0) परिकल्पना स्वीकृत नहीं
उ0शि0सं0 में अध्ययनरत महिला विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली	184	178 75	9 21					

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों को संज्ञानात्मक शैली का माध्य 168.85 है जो कि छात्राओं की संज्ञानात्मक शैली के औसत 178.75 से कम है। छात्र व छात्राओं के संज्ञानात्मक शैली में पाया गया यह अन्तर सार्थक है या नहीं यह जानने के लिए t परीक्षण (स्वतंत्र समूह) का प्रयोग किया गया तथा t का परिकलित मान (2.86) प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान 1.96 (5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर) से अधिक है। अस्तु शून्य परिकल्पना, जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत नहीं की जा सकती है तथा यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्राओं की संज्ञानात्मक शैली छात्रों के मुकाबले सार्थक रूप से अधिक है जिसका मुख्य कारण छात्राओं का अधिक संवेदनशील होना तथा सांवेगिक रूप से अधिक परिपक्व होना हो सकता है।

सारणी-4.2 : उ0शि0सं0 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली एवं अध्ययन आदत का तुलनात्मक सम्बन्ध का अध्ययन

विवरण	संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक = r	सार्थकता स्तर	p मान	परिणाम
उ0शि0 संस्थाओ मे अध्ययनरत विद्यार्थियो की संज्ञानात्मक शैली	380	$r = 0.46$	$\alpha = 0.05$	0 003	शून्य (H_0) परिकल्पन स्वीकृत नहो
उ0शि0 संस्थाओ मे अध्ययनरत विद्यार्थियो की अध्ययन आदत	380				